INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

February 2022

E-ISSN : 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue – 286 (B)

अतिथी संपादक :
डॉ. उज्जन कदम, (प्राचार्य)
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर, तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

February-2022 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue – 286 (B)

अतिथी संपादक :
डॉ. उज्जन कदम, (प्राचार्य)
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,
तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : *Internet*.

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

February-2022 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue – 286 (B)

अतिथी संपादक :
डॉ. उज्जन कदम, (प्राचार्य)
समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,
तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :
प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :
प्रा. रवींद्र ठाकरे
प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : *Internet*.

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-
Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Issue – 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना
Impact Factor : 6.625 Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
February-2022

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
०१	'धरती आबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	०७
०२	आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा	डॉ. अशोक जाधव	१३
०३	महादेव टोप्पो की कविताओं में आदिवासी चेतना	प्रो. डॉ जिभाऊ मोरे	१७
०४	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. पूनम बोरसे	२२
०५	हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. राजाराम शेवाले	२९
०६	आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर	डॉ. रघुनाथ वाकळे	३३
०७	कवि बृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना	प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	३८
०८	आदिवासी विमर्श	प्रा. के. के. बच्छाव	४३
०९	लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज	डॉ. यशोदा मेहरा	४५
१०	हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	४९
११	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	प्रा. हंसा बागरे	५२
१२	हिंदी मौखिक इतिहास मे आदिवासी चेतना	डॉ. ज्योती रामोड	५७
१३	राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श	डॉ. सीताबाई पवार	६०
१४	हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	६४
१५	उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	प्रा. निलेश पाटील	६७
१६	हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. निलेश देशमुख	७०
१७	कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. अनिता राजबंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	७४
१८	आदिवासी समाज और हिंदी नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर	७९
१९	हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख	८५
२०	हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. जगदीश पाटनवार	८८
२१	२१ वी सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. संदिप देवरे	९१
२२	'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	९४
२३	हिंदी काव्य विधा मे आदिवासी चेतना	प्रा. दिपक आहिरे	९७
२४	समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना	प्रा. राकेश पगार	१००

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श

डॉ. सीताबाई नामदेव पवार
हिंदी विभाग प्रमुख
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदापुर

आदिवासी के लिए अनुसूचित आदि जाति परिभाषा संवैधानिक परिभाषा है।[1] आदिवासी शब्द मे तात्पर्य है मूलनिवासी।[2] या जंगली आदिम । विमर्श शब्द का अर्थ अनुकूल-प्रतिकूल चिंतन, सोच विचार, चर्चा सोच समझ आदि।[3] हिंदी साहित्य में आदिवासी समाज पर अनेक साहित्यकारों ने प्रकाश डाला है, जिनमें राजेंद्र अवस्थी, संजीव वीरेंद्र, सत्यार्थी आदि के नाम उल्लेखनीय है। लेखक राजेंद्र अवस्थी द्वारा जंगल के फूल उपन्यास आदिवासियों के जीवन केंद्रित ऐसा उपन्यास है जिसमें वस्तर के गोंड जनजाति के आदिवासियों के जीवन का सूक्ष्मता से निरिक्षण किया है। उपन्यास स्वतंत्रता पूर्व की पृष्ठभूमी में लिखा गया है ।

आदिवासी जन - जाती जीवन की कथा का आधार वनाकर उपन्यास लिखने वालो में राजेंद्र अवस्थी का नाम लिया जाता है । आदिवासी समाज जीवन की सच्ची तस्वीर राजेंद्र अवस्थी के साहित्य में परी लक्षित होती है । अवस्थी जी ने शोषित पीडित आदिवासियों की व्यथा -कथा को अपने उपन्यास का कथ्य वनाया है। जंगल के फूल उपन्यास लिखने से पहले वे गोंड आदिवासी जीवन पर सुरज की किरण की छाव उपन्यास लिख चुके थे, जो हिंदी साहित्य जगत मे वहु चर्चित रहा। यह उपन्यास सन उन्नीसो साठ में लिखा गया। इसमें मध्यप्रदेश की जंगली जातियों आदिम जातियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। साथ ही आदिवासी जनजीवन में शोषण प्रतिकार करने के लिए उभरती चेतना को भी रेखांकित किया है।

जंगल के फूल उपन्यास लिखने का मूल उद्देश्य बस्तर के घोटूल जीवन वहां की संस्कृति रीति रिवाज और उनके जीवन का समग्र चित्रण करना है। इस उपन्यास में सुलकसाए और महुआ की प्रेम कथा न होकर वास्तव में महुआ और सुलकसाए की कथा इस उपन्यास की एक उप कथा कथा ही है। लेखक ने झिरिया, मूसरी, सिरहा, गाय का गायता, गंगी गंगी आदि अनेक जंगलों के फूलों के माध्यम से बस्तर क्षेत्र के जनजीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। यहां के ७५% निवासी अब भी आदिम सभ्यता में है। उनके अपने रीति रिवाज है, उनकी अपनी संस्कृति है और वह भी उनमें बुरी तरह से जकड़े हुए हैं। अवस्थी के मतानुसार जगदलपुर से १०० मील तक की कोई रेलमार्ग नहीं है। मोटर का आना जाना अभी आरंभ हुआ है इसलिए यहां के निवासी शहर सभ्यता से कोसों दूर है और उन्होंने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को अछूत कौमार्य की भांति सुरक्षित रखा है।[4] आदिवासी विमर्श के संदर्भ इस उपन्यास में चारों भागों में विभाजित किया जा सकता है।

सामाजिक परिवेश:-

जनजातियों के अपने रीति रिवाज, प्रथाएं ,नियम कानून है जिन्हें वे अपने ढंग से व्यवहार में लाते हैं। इन सभी वातों की जानकारी एक पीढ़ी को हस्तांतरित करने के लिए सामुदायिक केंद्रों की स्थापन की परंपरा

है। इन्हीं घोटुलन और कहीं रंगभंग कहा जाता हैं।[5] आदिवासियों का जीवन बहुत सीधा सादा और सरल होता है। भारत देश का आदिवासी समाज अनेक जन जातियों में विभाजित है। इनमें से कई समूह गोंडा , मुंडा, संथाल आदि क्षेत्र बहु संख्य है। मध्य प्रदेश तो गोंडो का गढ़ माना जाता है। इन आदिवासियों को आधुनिक जीवन पसंद नहीं है। ज्ञानचंद गुप्त लिखते हैं "वस्तर गोंड जाति आज भी आधुनिक सभ्यता से अलग वनों घाटियों नदी नालो पशु पक्षियों देवी देवताओं तथा रूढ़ियों और संस्कारों से जुड़ी हुई आदि संस्कृति में जी रही है मानव तथा प्रकृति का निशान संबंध इस संस्कृति का मूल आधार है।[6] बस्तर के आदिवासियों के सामाजिक सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने में घोटूल की महत्वपूर्ण भूमिका है। वह आदिवासी युवक और युवतियों की जीवन का एक आवश्यक अंग है। मां-बाप से अलग रहने लायक तथा विवाह होने तक युवक युवती या भूल जाते हैं। विवाहित लोगों का घोटूल में प्रवेश वर्जित है उपन्यासकार लिखते हैं। यहां हर प्रेमी की एक प्रेमिका होती है और हर प्रेमिका अपने प्रेमी पर शासन करती है। यह प्रेमिका समय-समय पर वदल सकते हैं। रात को काफी देर तक किस्से कहानियां नाच गाना होता रहता है ।मुर्गे की वात होते ही फिर घोटूल धीरे-धीरे खाली होने लगता है।

भारतीय आदिवासी समाज में नारी की स्थिति दयनीय है। नारी को पहले से पुरुष वर्ग में भोग की वस्तु समझकर एक सोची-समझी रणनीति के तहत उसे अपने अधिकारों से वंचित कर सारे मार्ग बंद कर दिए गए हैं। विमल शंकर नगर के मतानुसार गोंड व करनट जनजातियों में नारी पर पुरुष का शासन रहता है। नारी को अपने जीवन यापन के लिए पुरुष का आश्रय लेना पड़ता है। वस्तर के गोंड आदिवासी जीवन पर आधारित जंगल के फूल उपन्यास में गोंड नारी की सामाजिक स्थिति के संवंध में अवस्थी लिखते हैं औरत की जात वह तो कच्ची माटी की हंडी है। जिसे जो निशान उस पर वनाना हो बना दे। जव कोई हंडी अकड़ती है तो कुमार उसे चाक में कर कर भरपूर तड़पाता है। मुंदरी जानती थी कि दुनिया में कोई औरत बिना मर्द के नहीं रह सकती। मर्द उसका सहारा है ।वैसे ही जैसे बेल के पेड़ के लिए झाड़ होता है उपन्यास की नायिका महुआ नारी स्थिति पर कहती है "काश रात में उसे अफसर के पास रहना पड़ता झिरिया चुड़ैल होती तो क्या पता सवेरे सुलकसाए उससे आंखे फेर लेता और न जाने किस से वह अपनी नजरें उलझा लेता इसीलिए वह बंधन ही रहना चाहता है। उसका क्या वह रह सकता है, पर मेरा क्या होगा ? मैं औरत जो हूं। उक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि इस उपन्यास में गोंड आदिवासी नारी की सामाजिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। आदिवासी समाज में जाति व्यवस्था को प्राधान्य दिया जाता है । भारत के अधिकांश भागों के आदिवासी समूहों में पुरुष की प्रधानता है और उत्तराधिकार का निर्णय पिता की पंक्ति में होता है। गोंड आदिवासी समाज में गायता गांव का मुख्य एवं सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। इसके अलावा जाति व्यवस्था का एक और महत्व का स्थान सरदार का है। वह घोटूल नामक संस्था का लीडर होता है। उसके द्वारा गांव के युवक और युवतियों को सुरक्षित रखा जाता है।

धार्मिक परिवेश:-

आदिवासी समाज में संथाल गोंडा, भील और अन्य जनजातियां होती है। भारतीय जनपदीय समाज की भांति आदिवासी समाज में भी धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। आदिवासी पूर्वजों एवं परंपरागत देवताओं की पूजा करते हैं। यह पूजा प्रायः पशु पक्षियों की बलि करके मंत्र पाठ करने से संपन्न की जाती है। आदिवासी समाज में अधिकांश धार्मिक संस्कार पर्व के रूप में मनाए जाते हैं। लाडूकाज पर्व के अवसर पर गोंड आदिवासियों द्वारा

नारायण देव की पूजा होती है। पूजा के विधि विधान को सूअर की बलि से संपन्न किया जाता है। अवस्थी जी लिखते हैं कि "सिरहा नारायण देव की पूजा में खो गया है दो चार मंत्र पढ़ने के बाद उसने देवताओं को धूप दी। सारे लोगों की आंखें सूअर पर अटक गई।.... सूअर मंत्र के प्रभाव से झूम उठा चावल के दानों को समेटने के लिए उसने जैसे ही मुंह खोला सुरकसाए ने आगे बढ़कर उसकी पूंछ काट ली। पूंछ काटते ही नारायण देव की आत्मा सूअर पर उतर आई।[7] गोंड आदिवासी लोग दंतेश्वरी, शीतल माता, गोधना माता, मावली माता एवं पूर्वजों की धूम धाम से पूजा आराधना करता है।

आर्थिक परिवेश:-

आदिवासियों का आर्थिक जीवन उनकी भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर रहता है। जंगल की फूल उपन्यास इन लोगों की अर्थव्यवस्था वनों पर आश्रित होती है। गोंडों की आर्थिक स्थिति पर पी.आर नायडू लिखते हैं "सामान्यतः गोंड अपने खेतों में दो फसलें बोता है। धान, कोदो, कुटकी, तिलहन, चावल, मक्का, तिल्ली की फसल बोयी जाती है ।रबी में गेहू, चना की फसल भी बोता है। दो- दो फसल लेने के बाद भी एक गोंड परिवार का वर्ष भर का गुजारा ठीक ढंग से नहीं होता।"[8]

आदिवासी समुदाय अपने परिवार के उदर पोषण के लिए नाना प्रकार के जीव जंतु का शिकार करते हैं। गोंड औरतें रोजगार के लिए अनेक वन-वन भटकती फिरती रहती है। लेहूं पता, जलाऊं लकड़ी वेचना इनका प्रमुख कार्य हो इस उपन्यास में एक सरकारी अधिकारी के गोंडू का खाली देखने पर हुजूर सारी रियासत के वहुत से गांव दिन में खाली पड़े रहते हैं। यहां के मर्द और जंगल में चले जाते हैं। पेड़ के लिए चारा तलाशते हैं। हुजूर यहां खाने का ठिकाना कहां है? उपयुक्त कथन से पता चलता है कि बस्तर के गोंड आदिवासियों की आर्थिक स्थिति न के बराबर है।

सांस्कृतिक परिवेश:-

आदिवासी समाज सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध है।इस समाज की लोक संस्कृति के अंतर्गत मुख्यत लोकगीत, लोक नृत्य, लोकवाद्य, लोक कथाएं, पर्व, त्योहार आदि का समावेश किया जाता है। आदिवासियों के लोकगीत और लोकनृत्य की समृद्धता। भारत के सर्वाधिक विकसित आधुनिक कलाकारों को भी प्रेरणा प्रदान कर सकती है। आदिवासियों की परंपरा में लोकनृत्य, लोकगीत का बडा महत्व हैं। अवस्थी जी ने इस उपन्यास में गोंड आदिवासियों का लोकगीत प्रस्तुत किया है ....सु... र्र र्र र्र की भराई आवाज जंगली भैंसों के सीगे के वाजे से निकली और ढोल के घराई सुरों के साथ मिलकर गांव भर में फैल गई। रे रे लो रेल रेल ए बस्तर जिले के गोंड आदिवासी में घोटूल गीत का भी विशिष्ट महत्त्व है।[9] शादी, घोटूल, स्वागत शिकार और कन्या विदाई गीत के अलावा कुछ मृत्यु गीत भी आदिवासी समाज में प्रचलित है। बस्तर का जनजीवन, जंगल, जनजाति जितने आकर्षक है उसने ही मोहक और आकर्षक उनका नृत्य है। नृत्य की गति की गति वाघ यंत्रों के साथ-साथ होती है। उनका नृत्य घेराव बनाकर रहता है। उदाहरण के तौर पर "देखते देखते वहां नाच गाने का खासा मजमा जम गया। ....फगरत के नंगे हाथ ढोल के चमड़े परखा देने लगे।[10] लोकगीत, लोकनृत्य के अलावा लोक कथाएं भी आदिवासी समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य कथा का प्रयोग किया जाता है। इस उपन्यास के एक मुंडा

की मां लोक कथा सुनाती है " हमारा नंद राज जादू दोनों का स्वामी है ...जाओ, सारा जंगल खोजो, कहीं न कहीं कोई भूत, जानवर या मृत्यु लोक का आदमी छिपा है।[11] गोंड आदिवासी समाज तीज त्योहार, उत्सव, मेला इन सभी को सांस्कृतिक सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।

राजेंद्र अवस्थी आदिवासी साहित्य की एक सशक्त हस्ताक्षर है। अवस्थी ने बस्तर के गोंड जनजाति के आदिवासियों के जीवन का सुक्ष्म ता से निरीक्षण किया है और उनके समग्र जीवन पर जंगल के फूल उपन्यास की रचना की है। यह उपन्यास स्वतंत्रता पूर्व की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। उपन्यास की कथा भूमि बस्तर जिले का गढ़ बंगाल गांव है। जिसमें अधिकतर गोंड आदिवासी बसते हैं। मध्य प्रदेश के आधे से अधिक भाग में आदिवासियों में गोंड जाति सबसे अधिक है। गोंड प्रकृति की कोख में किसी पहाड़ी पर या नदी किनारे रहना पसंद करते हैं। मानव और प्रकृति का निश्चल संबंधित संस्कृति का मूल आधार है। इस उपन्यास का मूल उद्देश्य बस्तर के घोटूल जीवन, वहां की संस्कृति, रीति रिवाज और उनके जीवन का समग्र चित्रण करना है। इसमें ऐतिहासिक तथ्यों के साथ काल्पनिक कहानी के रूप में महुआ और सुलकसाए की प्रेम कथा का भी वर्णन है। लेखक ने झिरिया झालर, भूसरी, सिरहा, गायता,गंगा आदि अनेक जंगलों के फूलों के माध्यम से इतिहास में उल्लेखित बस्तर क्षेत्र के जनजीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत उपन्यास में सामाजिक धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण किया है। भारतीय आदिवासी समाज में पाए जाने वाले संस्कृति के विविध प्रकार के लोकगीत , कथाएं, लोकनृत्य, लोकोक्तियों के माध्यम से लोकसंस्कृती के दर्शन हमें प्रस्तुत उपन्यास में होते है।

संदर्भ:-

1. राम शिव लोचन शर्मा, भारत की जनजातियां पृष्ठ.90
2. श्री नवल जी नालंदा शब्दकोश पृष्ठ. 126
3. समांतर कोश हिंदी थी सारस, अरविंद कुमार पृष्ठ. 131
4. जंगल के फूल, राजेंद्र अवस्थी, पृष्ठ. भूमिका
5. आदिवासी केंद्रित हिंदी साहित्य, संपा. उषा कीर्ति राणावत, पृष्ठ.132
6. हिंदी के आंचलिक उपन्यास, ज्ञानचंद्र गुप्त पृष्ठ. 132
7. जंगल के फूल, राजेंद्र अवस्थी, पृष्ठ.15
8. भारत के आदिवासी, पी.आर. नायडू, पृष्ठ.27
9. जंगल के फूल, राजेंद्र अवस्थी, पृष्ठ. 13
10. वही, पृष्ठ.19
11. वही, पृष्ठ.38